धनतेरस (धनत्रयोदशी), १० नवम्बर २०२३, शुक्रवार, शुक्रप्रदोष

(सभी गणना गाजियाबाद शहर अनुसार)

तिथि : द्वादशी १२:३५ तक तत्पश्च्यात त्रयोदशी
नक्षत्र : हस्त
योग : विष्कम्भ १७:०६ तक तत्पश्च्यात प्रीति
सूर्य राशि : तुला
चन्द्र राशि : कन्या
धनतेरस पूजा विशेष मुहूर्त : १७:४६ से १९:४२ बजे तक
यम दीपम का समय : १७:२९ से १८:४८

धनतेरस महत्व

- पंचदिनात्मक दीपावली पर्व का पहला दिन
- धन्वंतरि जयंती - आयुर्वेद के जनक भगवान धन्वंतरि का अमृत कलश के साथ समुद्र मंथन से प्राकट्य
- यम दीपदान - अकाल मृत्यु के भय से बचने के लिए
- कुबेर पूजन
- लक्ष्मी पूजन
- बर्तन खरीदने की परम्परा
- आभूषण, चाँदी सिक्का, सूखा धनिया खरीदना
- सांयकालीन दीपदान
- इस वर्ष २०२३ को धनतेरस के दिन अभीष्ट सिद्धि तथा चारो पदार्थो (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को देने वाला शुक्रप्रदोष है
- गोत्रिरात्र व्रत - त्रिदिवसीय व्रत (११ नवम्बर २०२३ सूर्योदयव्यापिनी त्रयोदशी से आरम्भ)

पाँच दिवसीय दीपावली महापर्व का प्रारम्भ धनत्रयोदशी से होता है। ऋतशील शर्मा श्रीचण्डी-धाम प्रयागराज के अनुसार यहाँ से देवताओं की सुषुप्तावस्था-चतुर्मास का अन्तिम भाग ही शेष रहता है और देवताओं के जागरण की पूर्व सन्ध्या प्रारम्भ होती है। साधक इस दिन दिव्य भावों की ऋणात्मकता के स्थान पर घनात्मकता की कल्पना करता है और दिव्य भावों की घनात्मकता का यह आभास उसे 'अमृत' प्राप्ति का आभास कराता है। अतएव इस दिन अमृत-कलश-धारी महाविष्णु धन्वन्तरि का स्मरण-पूजन होता है। साथ ही कामदेव द्वारा पूजित देवी कामेश्वरी का भी पूजन होता है क्योंकि कामनाओं के अधिष्ठाता मन को ऊर्ध्व दिशा प्रदान करने की वेला होती है।

धनतेरस के दिन सजावट

- घर को पीले/लाल रंग के फूलों से सजायें। घर में चमेली या चंपा के फूलों की खूशबू का इस्तेमाल करें। मुख्यद्वार पर सजावट के लिए चमेली, जूही, शतावरी आदि लगाये जा सकते हैं।
- प्रातःकाल स्नान करने के बाद हल्दी तथा चावल पीसकर उसके घोल से घर के प्रवेश द्वार पर मांगलिक चिह्न जैसे स्वास्तिक, ॐ अंकित करें।
- मुख्यद्वार पर बंदरवार लगायें

धनतेरस के दिन खरीददारी

- धनतेरस को बर्तन तथा चांदी खरीदना बहुत शुभ होगा। जो व्यक्ति कहता है धनतेरस के दिन सोना जरूर खरीदना चाहिए मैं उनसे कहना चाहता हूँ "तेते पाँव पसारिये जेती लंबी सौर"। चाँदी/पीतल/ताँबा धातु से बनी वस्तु खरीदना भी शुभ होता है।
- धनतेरस पर लोग चाँदी का सिक्का खरीदते हैं जिसका प्रयोग दीवाली के दिन लक्ष्मी पूजन में करते हैं।
- धनतेरस की शाम को आप एक चांदी की कटोरी खरीदकर उस कटोरी का पूजन करें, फिर दीपावली की रात्रि में उस कटोरी में खीर से मां लक्ष्मी को भोग अर्पित करें और प्रसाद के रूप में उसी खीर का स्वयं सेवन करें। अब आप प्रत्येक पूर्णिमा को उस कटोरी में खीर का सेवन करें। यह उपाय बहुत ही प्रभावशाली है। इसके प्रभाव से आप आर्थिक संकट में नहीं आ सकते हैं। अगर आपके पास पहले से ही चांदी की कटोरी है तो उसी का उपयोग कर सकते हैं।
- इस दिन सूखे धनिया के बीज खरीद कर घर में रखना भी परिवार की धन संपदा में वृद्धि करता है।
- अगर आपके पास कुबेर यन्त्र नहीं है तो आज लायें। आज से शुरू करके प्रतिदिन उसकी पूजा करें।
- श्रीविद्या में दीक्षित आज श्रीयंत्र की विशेष पूजा करें।

धनतेरस के दिन धन्वंतरि जयंती

- समुद्र मंथन के समय धनत्रयोदशी के दिन अमृतकलश हाथमें लेकर देवताओं के वैद्य भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए । इसीलिए यह दिन भगवान धन्वंतरि के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है ।
- आरोग्य, आयुष्य और धन-धान्य-सुख की प्राप्ति के लिए रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान् धन्वन्तरि की पूजा करें। गरुड-पुराणोक्त रोग-नाशिनी श्री धन्वन्तरि व्रत-कथा का श्रवण करें।
- इस दिन नीम के पत्तों से बना प्रसाद ग्रहण करनेका महत्त्व है । माना जाता है कि, नीम की उत्पत्ति अमृत से हुई है और धन्वंतरि अमृतके दाता हैं । अत: इसके प्रतीक स्वरूप धन्वंतरि जयंती के दिन नीम के पत्तों से बना प्रसाद बांटते हैं।

- आरोग्य के देवता धनवंतरी को प्रसन्न करने के लिए निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए धन्वन्तरि देव को प्रणाम करें

ॐ शंखं चक्रं जलौकां दधिदमृतघटं चारुदोर्भिश्चतुर्मिः।
सूक्ष्मस्वच्छातिहृद्यांशुक परिविलसन्मौलिमंभोजनेत्रम॥
कालाम्भोदोज्ज्वलांगं कटितटविलसच्चारूपीतांबराढ्यम।
वन्दे धन्वंतरिं तं निखिलगदवनप्रौढ़दावाग्निलीलम॥
ऊं नमो भगवते महासुदर्शनाय वासुदेवाय धन्वंतराये:।
अमृतकलश हस्ताय सर्व भयविनाशाय सर्व रोगनिवारणाय ॥
त्रिलोकपथाय त्रिलोकनाथाय श्री महाविष्णुस्वरूप।
श्री धनवंतरी स्वरूप श्री श्री श्री औषधचक्र नारायणाय नमः॥

धनतेरस के दिन कुबेर पूजन

कुबेर धन सम्पदा की दिशा उत्तर के लोकपाल हैं। ये भूगर्भ के भी स्वामी हैं। माना जाता है धनतेरस के दिन उनकी पूजा विशेष फलदायी है

- रात्रि में कुबेर यन्त्र की स्थापना अपने घर के मंदिर में करें। यह कुबेर यन्त्र किसी भी पूजा की दूकान पर बहुत सस्ता मिल जाएगा। बाकी अगर आप धनवान हैं तो अन्य धातु का भी ले सकते हैं। निम्न मंत्र का जप करें।

'यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन-धान्य अधिपतये
धन-धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।'

- समस्त धन सम्पदा के स्वामी कुबेर के लिए धनतेरस में सायंकाल 13 दीप समर्पित किये जाते हैं।

धनतेरस के दिन श्री यन्त्र पूजन

धन त्रयोदशी और दीपावली को यंत्रराज श्रीयंत्र की पूजा का अति विशिष्ट महत्व है । श्रीयंत्र का उल्लेख विभिन्न प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मिलता है। महापुराणों में श्री यंत्र को देवी महालक्ष्मी का प्रतीक कहा गया है। इन्हीं पुराणों में वर्णित महालक्ष्मी स्वयं कहती हैं- 'श्री यंत्र मेरा प्राण, मेरी शक्ति, मेरी आत्मा तथा मेरा स्वरूप है। श्री यंत्र के प्रभाव से ही मैं पृथ्वी लोक पर वास करती हूं।" श्री यंत्र में 2816 देवी देवताओं की सामूहिक अदृश्य शक्ति विद्यमान रहती है। इसीलिए इसे यंत्रराज, यंत्र शिरोमणि, श्रीचक्र, त्रैलोक्यमोहन चक्र, षोडशी यंत्र व देवद्वार भी कहा गया है।

श्रीयंत्र की अद्भुत शक्ति के कारण इसके दर्शन मात्र से ही लाभ मिलना शुरू हो जाता है। इस यंत्र को मंदिर या तिजोरी में रखकर प्रतिदिन पूजा करने व प्रतिदिन कमलगट्टे की माला पर श्री सूक्त के पाठ श्री लक्ष्मी मंत्र के जप के साथ करने से लक्ष्मी प्रसन्न रहती है और धनसंकट दूर होता है । यह यंत्र

मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष देने वाला है। इसकी कृपा से मनुष्य को अष्टसिद्धि व नौ निधियों की प्राप्ति हो सकती है । श्री यंत्र के पूजन से सभी रोगों का शमन होता है और शरीर की कांति निर्मल होती है । इसकी पूजा से पंचतत्वों पर विजय प्राप्त होती है । इस यंत्र की कृपा से मनुष्य को धन, समृद्धि, यश, कीर्ति, ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति होती है। श्री यंत्र के पूजन से रुके हुए कार्य बनते हैं । श्री यंत्र की श्रद्धापूर्वक नियमित रूप से पूजा करने से दुख दारिद्र का नाश होता है । श्री यंत्र की साधना उपासना से साधक की शारीरिक और मानसिक शक्ति पुष्ट होती है । इस यंत्र की पूजा से दस महाविद्याओं की कृपा भी प्राप्त हो सकती है । श्री यंत्र की साधना से आर्थिक उन्नति होती है और व्यापार में सफलता मिलती है ।

आज श्री यन्त्र की विधिवत स्थापना करें। श्री सूक्तम, लक्ष्मी सूक्तम, कनकधारा स्तोत्र, लक्ष्मी सहस्त्रनाम का पाठ करें। दक्षिणावर्ती शंख दूध भरकर श्रीयंत्र का अभिषेक करें। कहते हैं जब एक बार माँ लक्ष्मी रूठकर चली गयीं तो धनतेरस के दिन ही गुरू बृहस्पति के नेतृत्व में निर्मित श्री यंत्र की स्थापना करके विधिवत पूजा शुरू की गयी। देवी लक्ष्मी दीपावली के दिन प्रकट हुई और कहने लगी, श्रीयंत्र की पूजा के कारण मुझे विवश होकर आना पड़ा। अब मैं आप सभी से प्रसन्न हूं, पृथ्वीवासी अब मेरी कृपा से धन समृद्घि प्राप्त कर सकेंगे।

श्रीयन्त्र की पूजा का अधिकार केवल श्रीविद्या में दीक्षित साधकों को है यह सबको ध्यान रखना चाहिए।

धनतेरस के दिन श्री लक्ष्मी पूजन

- माता लक्ष्मी की सामान्य पूजा उपचारों गंध, अक्षत, फूल, फल अर्पित कर धूप और घी का दीप (घी का दीपक पूरी रात जल सके) लगाने के बाद लक्ष्मी स्तुति का पाठ करें। माँ लक्ष्मी को बताशा, पान, मखाना या मखाने की खीर, सिंगाड़ा फल जरूर अर्पित करें। बाद में स्वयं भी प्रसाद रूप में ग्रहण करें।
- “ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ आगच्छ ॐ स्वाहा” इस मंत्र का धनतेरस से दिवाली तक सुन्दर चमकदार स्फटिक की माला से प्रतिदिन जप करें। श्वेत रेशमी वस्त्र का आसन हो तथा मुख पूर्व अथवा उत्तर की तरफ हो
- ताम्बे की तश्तरी पर चावल से अष्टदल कमल बनायें और उसके बीच में लक्ष्मी चरण रखें। अब इस थाली को पूजाघर में रख दें। धनतेरस के दिन से दीवाली तक रोज़ाना सुबह-शाम लक्ष्मी माता की आरती करें। दक्षिणावर्ती शंख में जल डालकर पूरे घर में छिड़कें।
- मां लक्ष्मी की प्रतिमा के सामने नौ बत्तियों वाला दीपक जलाएं।
- धन लाभ के लिए माँ लक्ष्मी के सामने मोंगरे या चमेली का पुष्प जरूर चढ़ाएं।
- विभिन्न स्तोत्रों से माँ लक्ष्मी की पूजा करें

धनतेरस के दिन दीपदान

- पहले बताई विधि के अनुसार यमदीपदान करें।

- प्रदोषकाल में कुबेर के लिए निमित्त 13 दीप जलायें।
- प्रदोषकाल में शिवलिङ्ग के समक्ष घी के 1000 अथवा 100 अथवा कम से कम 32 दीपक जलायें।
- निर्धनता दूर करने के लिए अपने पूजाघर मैं धनतेरस की शाम को अखंड दीपक जलाना चाहिए जो दीपावली की रात तक जरूर जलता रहे। अगर दीपक भैयादूज तक अखंड जलता रहे तो घर के सारे वास्तु दोष भी समाप्त हो जाते हैं।
- घर के ईशान कोण में गाय के घी का दीपक लगाएं। बत्ती में रुई के स्थान पर लाल रंग के धागे का उपयोग करें साथ ही दीए में थोड़ी सी केसर भी डाल दें।
- आर्थिक अनुकूलता के लिए प्रदोषकाल में एक दीपक को तिल के तेल से भरकर प्रज्वलित करें और गन्धादि से पूजन करके अपने घर के मुख्य द्वार पर अन्न की ढ़ेरी पर रख दें। स्मरण रहे वह दीप रातभर जलते रहना चाहिये, बुझना नहीं चाहिये।

धनतेरस के दिन अन्य बातें

- ऐसी मान्यता है कि धनतेरस के दिन यदि घर पर छिपकली दिख जाये तो यह समझे की पूरे वर्ष आपके घर पर धन की कमी नहीं होगी।
- भोग-मोक्ष की प्राप्ति के लिये वट वृक्ष के समीप दीपदान करके श्रीहरि विष्णु के वैश्रवण (कुबेर) नाम का स्मरण करें
- बिल्वपत्र अथवा कमल पुष्प से शिव सहस्त्रार्चन करें। दारिद्रदहन शिवस्तोत्र का पाठ करें। कुबेरकृत शिवस्तोत्र का पाठ करें जिससे कुबेर अपनी छिनी हुई धन-सम्पत्ति फिर से प्राप्त की थी। शिवजी जी इस मंत्र से पूजा करके ब्राह्मण को भोजन करायें
  "भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमते । रुद्राय नीलकंठाय शर्वाय शशिमौलिन।।
  उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भवहारिणे। ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः।।"

गरुड़-पुराणोक्त रोग-नाशिनी श्री धन्वन्तरि व्रत-कथा

प्रथम अध्याय

सनकादिक मुनियों ने सूत जी से कहा – हे सूत महा-मुने ! आपने भगवान् धन्वन्तरि की पूजा-विधि का विस्तार-पूर्वक वर्णन किया, किन्तु इसे सुनने पर भी हमें तृप्ति नहीं हुई । अतः श्री धन्वन्तरि का माहात्म्य अधिक विस्तार से बताइए ।

मुनि-श्रेष्ठ सुत जी ने कहा – हे मुनियों ! आप पाप-विनाशिनी कथा को सुनिए । इस कथा को सुनने से सभी रोगों का नाश होता है –
एक समय नारद जी सभी लोगों के कल्याण की इच्छा से समुद्र-द्वीप-पर्वत-सहित सम्पूर्ण पृथ्वी का भ्रमण कर रहे थे । वहाँ उन्होंने सभी लोगों को विविध रोगों से दुःखी देखा । यह देखकर नारद जी चिन्तित हुए और वहाँ से स्वर्ग जा पहुँचे । स्वर्ग में इन्द्र आदि देवता भी रोगी हो रहे थे । यह देखकर

नारद जी की चिन्ता और बढ़ गई । चिन्ता करते हुए वे वैकुण्ठ में पहुँचे । वैकुण्ठ में नारद जी ने शंख-चक्र-अमृत-कलश-धारी और अभय-हस्त धन्वन्तरि विष्णु को देखा । श्री (लक्ष्मी), भू (पृथ्वी) और नीला देवी उनकी चरण-सेवा कर रही थी । ऐसे महात्मा धन्वन्तरि-रुपी श्री विष्णु को नारद जी ने भक्ति-पूर्वक प्रणाम किया और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे ।

श्री नारद जी बोले –
हे देवों के देव ! जगन्नाथ ! भक्तों पर दया करने वाले ! दीन-बन्धु ! दया-सागर ! जगत् की रक्षा में तत्पर ! आप मुझे शरणागत जानकर सन्तुष्ट कीजिए । हे भगवन् ! मैंने पृथ्वी आदि सभी लोकों में पर्यटन किया और वहाँ के निवासी जनों को नाना रोगों से दुःखी पाया । किसी को ज्वर ने गिराया है, तो किसी को राज-यक्ष्मा ने धर दबाया । कोई अतिसार, श्वास, खाँसी, संग्रहणी और पाण्डु-रोगादि से पीड़ित है । कोई वात-रोगों से पीड़ित है । कोई फोड़े, गिल्टी, प्लेग आदि से युक्त सन्निपात रोग और प्रमेहादि रोगों से घेरे गये हैं । इस प्रकार लोग अनेक रोगों से ग्रस्त और दुःखी हैं । उन्हें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ और बारम्बार मैंने चिन्ता की । मैंने सोचा कि ये लोग कैसे नीरोग होंगे और प्रसन्न होंगे ? इसी चिन्ता से मन मैं व्याकुल होकर मैं आपकी शरण में आया हूँ । हे विश्वात्मन् ! शरणागत भूम्यादि लोकों की आप रक्षा कीजिये । त्रैलोक्य में आपके अतिरिक्त इनका कोई रक्षक नहीं है ।

भगवान् श्री विष्णु नारद जी के उक्त वचनों को सुनकर गम्भीर वाणी से बोले – हे मुने ! आप भय न कीजिये । मैं 'आदि-धन्वन्तरि' इन्द्र से आयुर्वेद प्राप्त कर पुनः अवतार लेकर सभी लोकों को नीरोग करुँगा । मैं कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, गुरुवार, हस्त नक्षत्र के समय अवतार लेकर 'आयुर्वेद' का उद्धार करुँगा । इसमें सन्देह न करो ।

।।श्री धन्वन्तरि-व्रत-कथा का पहला अध्याय।।

दूसरा अध्याय

भगवान् विष्णु के उक्त वचनों को सुनकर नारद मुनि अति प्रसन्न हुए और हर्ष से बोले –
हे भगवन् ! आप 'धन्वन्तरि-पूजा' की विधि बताइए । 'धन्वन्तरि-पूजा में कौन-सा ध्यान या विधान किया जाए ? उसका नियम क्या है ? उसका फल क्या है ? किस समय, किसने उस पूजा को किया है ? पूजा में क्या-क्या चीजें चाहिए ? हे देव-देवेश्वर ! लोकों पर अनुग्रह करने की इच्छा से कृपा पूर्वक यह सब मुझे बताइए ।

श्री भगवान् ने कहा – हे मुने ! तुमने लोकोपकार की इच्छा से पूछा है । अतएव तुमसे 'पाप-नाशिनी, रोग-नाशिनी कथा' कहता हूँ । धनगुप्त राजा के निमित्त कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गुरुवार हस्त नक्षत्र के समय मैं रात्रि के प्रथम प्रहर में गुप्त धन के समान 'धन्वन्तरि' नाम से अवतीर्ण होता हूँ । अतएव वह दिन संसार में 'धनत्रयोदशी' (धनतेरस) नाम से प्रसिद्ध होगा । यह तिथि सभी कामनाओं को देने वाली है ।

नारद जी ने पूछा – हे भगवन् ! कृपया विस्तार-पूर्वक बताइए कि बड़-बागी 'धनगुप्त' कहाँ हुआ और आपके दर्शन की प्राप्ति के लिए उसने कौन-सा व्रत किया था और हे दया-सागर नारायण ! उसने आपका पूजन क्यों किया था ?

श्री भगवान् ने कहा – पहले अवन्तीपुर (उज्जैन) में 'धनगुप्त' नामक राजा धर्म-मार्ग से प्रजा का पालन करने वाला हुआ था । वह सभी लोगों का प्यारा, उदार-चित्त था । उसे क्षय-रोग हो गया । उससे वह दिन-रात पीड़ित होने लगा । पीड़ा की निवृत्ति के लिए उसने जप, होम, नाना प्रकार की औषधियाँ की, परन्तु नीरोग न हुआ । तब वह खिन्न होकर विलाप करने लगा । राजा की स्त्री त्रिलोक में प्रसिद्ध, पतिव्रता, सदाचारिणी थी । उसने भी पति के मंगल की आकांक्षा से अनेक नियम, उपवास आदि किए, पर इससे भी राजा नीरोग न हुआ और अन्त में वह स्त्री भी अतीसार रोग से रोगिणी हो गई ।

हे मुने ! उस राजा से उस पतिव्रता स्त्री के पाँच पुत्र हुए । वे क्रमशः आमवात, प्लीहा, कुष्ठ, खाँसी और श्वास से पीड़ित हुए । उनको भी रोग से छुटकारा न मिला । राजा और रानी अपने पुत्रों को रोगार्त देखकर अत्यन्त दुःखी हुए । स्त्री-पुत्रों को रोग के सागर से मुक्त कराने की इच्छा से चिन्तित राजा घोर वन को चला गया । वन में राजा ने महा-मुनि 'भरद्वाज' को बैठे देखा । राजा ने उन्हें भक्ति-पूर्वक प्रणाम किया और अपना दुःख बताया । महा-मुनि भरद्वाज से राजा ने रोग-कष्ट-निवारण हेतु उपाय पूछा ।
भरद्वाज मुनि ने कहा – हे राजन् ! तुम्हारा वृत्तान्त मैंने जान लिया । तुम अति शीघ्र महा-विष्णु धन्वन्तरि की शरण में जाओ । मनुष्य उनके दर्शन मात्र से घोर दुस्तर रोगों से मुक्त हो जाता है ।
राजा ने भरद्वाज मुनि से उक्त बात सुनकर उनसे पूछा – हे महात्मन् ! आप कृपा कर उनकी आराधना-विधि मुझे भली-भाँति बताइए ।

ऋषि भरद्वाज ने कहा – हे महाभाग राजन् ! उस विधि को मैं कहता हूँ, सावधान चित्त से सुनिए ।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के शुभ दिन, प्रातः-काल उठकर शौच-मुख-मार्जन आदि से निवृत्त होकर स्नान करे । शुद्ध वस्त्र आदि धारण कर गुरु से प्राप्त उपदेशानुसार भगवान् धन्वन्तरि का ध्यान करे ।

निम्न मन्त्र पढ़कर व्रत का प्रारम्भ करे –

'करिष्यामि व्रतं देव *!* त्वद् -भक्तस्त्वत्-परायणः । श्रियं देहि जयं देहि*,* आरोग्यं देहि मे प्रभो *!'*

अर्थात् हे देव ! मैं आपका भक्त हूँ, आप में चित्त लगाकर आपका व्रत करूँगा । आप मुझे लक्ष्मी दीजिए, विजय दीजिए, आरोग्य दीजिए ।

देव-देव धन्वन्तरि से उक्त प्रार्थना कर, उनकी षोडशोपचार से पूजा करे। पूजा करने के बाद तेरह धागों का सूत्र लेकर तेरह गाँठ वाला 'दोरक' बनाए । इस 'दोरक' की भक्ति-पूर्वक पूजा करे और निम्न मन्त्र पढ़कर पुरुषों के दाहिने हाथ में तथा स्त्रियों के बाँएँ हाथ में बाँधे –

धन्वन्तरे *!* महा-भाग *!* जरा-रोग-निवारक *!*
दोर-रुपेण मां पाहि*,* स-कुटुम्बं दया-निधे *!*

आधि-व्याधि-जरा-मृत्यु-भयादस्मादहर्निशम्,
पीड्यमानं देव-देव ! रक्ष मां शरणागतम् ।।

अर्थात् – हे धन्वन्तरे ! हे महा-भाग ! आप जरा (बुढापा) और रोग के मिटाने वाले हैं । इसलिए हे दया-निधे ! आप इस सूत्र-रुप से स-कुटुम्ब मेरी रक्षा कीजिये । मैं दिन-रात आधि (मानसिक-दुःख) और व्याधि (रोग), जरा (बुढापा) तथा मृत्यु के भय से त्रस्त हो रहा हूँ । हे देव-देव ! शरण में आए हुए मेरी अब आप रक्षा करें ।

सूत्र-बन्धन के बाद 'देव-देव धन्वन्तरि' को भक्ति-पूर्वक 'अर्घ्य' निवेदन करे ।
अर्घ्य प्रदान करने का मन्त्र इस प्रकार है –

जातो लोक-हितार्थाय, आयुर्वेदाभिवृद्धये ।
जरा -मरण-नाशाय, मानवानां हिताय च ।।
दुष्टानां निधनायाय, जात्त धन्वन्तरे प्रभो !
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं, देव-देव कृपा-कर ।।

अर्थात् हे देव-देव, दया-कारी धन्वन्तरि ! आप लोकापकार के लिए, आयुर्वेद की अभिवृद्धि के निमित्त, मनुष्यों के हित तथा जरा-मरण का नाश करने के लिए अवतरित हुए हैं । मैं आपको अर्घ्य प्रदान करता हूँ । इसे स्वीकार कीजिए ।

अर्घ्य प्रदान करने के बाद ब्राह्मण को बायन-दान करे । बायन-दान के लिए गेहूँ के आटे में दूध, घी डालकर पकाए । पकने पर शक्कर डाले । केसर, कपूर, इलायची, लौंग, जावित्री डालकर इस सिद्ध नैवेद्य को भगवान् को अर्पित करे । आधा प्रसाद वेदज्ञ ब्राह्मण को अर्पित करे और आधा स्त्री-पुत्रादि सहित स्वयं प्रसाद-स्वरुप ग्रहण करे ।
हे राजन् इस विधि से व्रत करने से साक्षात् धन्वन्तरि स्वयं प्रकट होकर तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध करेंगे । इतनी कथा सुनाकर भरद्वाज मुनि ने विश्राम लिया ।

।।श्री धन्वन्तरि-व्रत-कथा का दूसरा अध्याय।।

तीसरा अध्याय

सूत जी बोले – हे मुनि-वरों ! राजा धनगुप्त ने मुनि की आज्ञा पाकर उनके कहे अनुसार तेरह वर्ष पर्यन्त भक्ति-पूर्वक व्रत किया । एक दिन व्रत-समाप्ति के अवसर पर साक्षात् धन्वन्तरि प्रकट हुए । राजा ने साष्टांग प्रणाम कर उनकी स्तुति की । भक्ति-पूर्वक की गई स्तुति स्वीकार कर भगवान् धन्वन्तरि ने कहा –

हे राजन् ! अब तुम डरो मत, तुम्हारा मंगल होगा । तुम हमसे वर माँगो । राजा ने यह सुनकर उन्हें पुनः साष्टांग प्रणाम किया और उनकी स्तुति की –

धन्वन्तरे नमस्तुभ्यं, नमो ब्रह्माण्ड-नायक !
सुरासुराराधितांघ्रे, नमो वेदैक-गोचर !
आयुर्वेद-स्वरुपाय, नमस्ते जगदात्मने ।।
प्रपन्नं पाहि देवेश ! जगदानन्द-दायक ! द
या-निधे महा-देव ! त्राहि मामपराधिनम् ।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगैः, पीड़ितं स-कुटुम्बिनम् ।।

अर्थात् हे धन्वन्तरे ! ब्रह्माण्ड-नायक ! आपको नमस्कार ! आयुर्वेद-स्वरुप-जगत् के अन्तर्यामी आपको नमस्कार । हे जगत् के सुखदायी देव-देव ! दया-सागर, महा-देव ! आप मुझ शरणागत अपराधी की रक्षा करें । मैं कुटुम्ब सहित जन्म-मृत्यु जरा आदि रोगों से पीड़ित हूँ ।

भगवान् धन्वन्तरि ने यह स्तुति सुनकर मेघ-गर्जन के समान गम्भीर वाणी से मुस्कुराते हुए कहा – हे महा-राज ! ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हूँ । अब हमसे वर माँग लो ।

राजा बोले – हे देव ! यदि आप प्रसन्न हैं, तो सबसे पहले स्त्री-पुत्रों सहित मुझे आरोग्य दीजिए । यह प्रार्थना सुनकर भगवान् ने कहा – राजन् ! तुमने जो प्रार्थना की है, वह पूर्ण होगी । इसके अतिरिक्त भी मैं वर देता हूँ । उसे सावधान होकर सुनो – तुमने जिस प्रकार यह व्रत किया है । इसी तरह जो व्रत करेंगे, उनको आरोग्य प्रदान कर मैं उन्हें अपनी स्थिर भक्ति दूँगा ।

सूत जी बोले – भगवान् धन्वन्तरि यह कहकर अन्तर्धान हो गए और राजा धनगुप्त अपनी पुरी में लौट गया । राजा नित्य स्त्री-पुत्रों सहित अमृत-पाणि धन्वन्तरि की स्तुति करने लगा । उसने पृथ्वी-लोक में नाना प्रकार के सुख भोगे और अन्त में भगवान् धन्वन्तरि की कृपा से मोक्ष पद प्राप्त किया ।

इस प्रकार मैंने तुम लोगों को भगवान् धन्वन्तरि की जन्मोत्सव-कथा सुनाई । इसके सुनने से सभी पापों का नाश होता है।

।।श्री धन्वन्तरि-व्रत-कथा का तीसरा अध्याय।।

गोत्रिरात्र व्रत

त्रिदिवसीय गोत्रिरात्र व्रत कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (सूर्योदयव्यापिनी) से अमावस्या तक किया जाता है । यदि सूर्योदय व्यापिनी तिथि दो दिन हो अर्थात् त्रयोदशी की वृद्धि हो, तो यह पहले दिन से किया जाता है । इस व्रत में उपवास किया जाता है । गौशाला में लगभग 4 हाथ चौड़ी एवं 8 हाथ लम्बी एक वेदी का

निर्माण किया जाता है । वेदी के ऊपर सर्वतोभद्रामण्डल का निर्माण किया जाता है । उसके ऊपर एक कृत्रिम वृक्ष बनाया जाता है, जिसमें फल और पुष्प लगे होते है तथा उस पर पक्षी बैठे होते है । इस कृत्रिम वृक्ष के नीचे ही मण्डल के मध्य भाग में भगवान् गोवर्धन (श्रीकृष्ण) की, उनके बायीं ओर रुक्मिणी,मित्रविन्दा, शैब्या और जाम्बवती की तथा दाहिने भाग में सत्यभामा, लक्ष्मणा, सुदेवा और नाग्रजिती की मूर्तियॉ स्थापित की जाती हैं । उनके सामने के भाग में नन्दबाबा और पीछे के भाग में बलभद्र, यशोदा की तथा श्रीकृष्ण के सामने सुरभि, सुभद्रा एवं कामधेनु नामक गायों की मूर्तियॉ स्थापित की जाती हैं । अगर ये मिट्टी की निर्मित की गयी है, तो इनपर सुनहरा रंग होना चाहिए इन १६ मूर्तियों की अर्घ्य, आचमन, स्नान, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य से क्रमशः पूजा की जाती है । पूजन में नाम मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए । इनके नाम मन्त्र निम्नानुसार है ।

१. गोवर्धनः - ॐ गोवर्धनदेवायै नमः
२. रुक्मिणीः - ॐ रुक्मिणीदेव्यै नमः
३. मित्राविन्दाः - ॐ मित्राविन्दादेव्यै नमः
४. शैब्याः - ॐ शैब्यादेव्यै नमः
५. जाम्बवतीः - ॐ जाम्बवतीदेव्यै नमः
६. सत्यभामाः - ॐ सत्यभामादेव्यै नमः
७. लक्ष्मणाः - ॐ लक्ष्मणादेव्यै नमः
८. सुदेवाः - ॐ सुदेवादेव्यै नमः
९. नाग्नजितीः - ॐ नाग्नजितीदेव्यै नमः
१०. नन्दबाबाः - ॐ नन्दबाबादेवाय नमः
११. बलभद्रः - ॐ बलभद्राय नमः
१२. यशोदाः - ॐ यशोदादेव्यै नमः
१३.सुरभिः - ॐ सुरभ्यै नमः
१४.सुनन्दाः - ॐ सुनन्दाये नमः
१५.सुभद्राः - ॐ सुभद्रायै नमः
१६. कामधेनुः - ॐ कामधेन्वै नमः

अन्तमें निम्मलिखित मन्त्र से भगवान् गोवर्धन सहित सभी देवी-देवताओं को अर्घ्य प्रदान करे -
गवामाधार गोविन्दरुक्मिणीवल्लभ प्रभो । गोपगोपीसमोपेत गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

निम्नलिखित मन्त्र से गायों को अर्घ्य प्रदान करे -
रुद्राणां चैव या माता वसूनां दुहिता च या । आदित्यानां च भगिनी सा नः शान्ति प्रयच्छतु ॥

उपर्युक्त मन्त्रों से गौशाला में उपस्थित गायों को भी अर्घ्य देना चाहिए और निम्नलिखित मन्त्रों से गौशाला में उपस्थित गायों को घास खिलानी चाहिए -
सुरभी वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता । प्रतिगृह्नातु मे ग्रासं सुरभी मे प्रसीदतु ॥

उपर्युक्त पूजन के उपरान्त मौसम के अनुरूप फल एवं पुष्प तथा पक्वान्न का भोग लगाएँ । उसके पश्चात् । बॉस से निर्मित डलियाओं में सप्तधान्य और सात प्रकार की मिठाई रखकर सौभाग्यवती स्त्रियों को देना चाहिए ।
उपर्युक्त प्रकार से तीन दिन कृत्य किए जाते हैं । चतुर्थ दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को प्रातःकाल गायत्री मन्त्र से तिल युक्त हवन सामग्री से 108 आहुतियॉ देकर व्रत का विसर्जन करना चाहिए ।
यह व्रत पुत्र, सुख एवं सम्पत्ति के लाभ के लिए किया जाता है ।

यमदीपदान

धनतेरस (धन त्रयोदशी) के दिन यमदीपदान

धनतेरस के दिन यम-दीपदान जरूर करना चाहिए। ऐसा करने से अकाल मृत्यु का भय समाप्त होता है। पूरे वर्ष में एक मात्र यही वह दिन है, जब मृत्यु के देवता यमराज की पूजा सिर्फ दीपदान करके की जाती है। कुछ लोग नरक चतुर्दशी के दिन भी दीपदान करते हैं।

स्कंदपुराण में लिखा है
कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे ।
यमदीपं बहिर्दद्यात् अपमृत्युर्विनिश्यति ।।
अर्थात कार्तिक मासके कृष्णपक्ष की त्रयोदशीके दिन सायंकाल में घर के बाहर यमदेव के उद्देश्य से दीप रखने से अपमृत्यु का निवारण होता है ।

पद्मपुराण उत्तरखण्ड अध्याय १२२ में लिखा है
कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां तु पावके।
यमदीपं बहिर्दद्यात् अपमृत्युर्विनिश्यति।।
कार्तिक के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को घर से बाहर यमराज के लिए दीप देना चाहिए इससे दुरमृत्यु का नाश होता है।

नारदपुराण पूर्वार्ध अध्याय १२२ के अनुसार

ऊर्ज्जकृष्णत्रयोदश्यामेकभक्तः समाहितः ।
प्रदोषे तैलदीपं तु प्रज्वाल्याभ्यर्च्य यत्नतः ।।
गृहद्वारे बहिर्दद्याद्यमो मे प्रीयतामिति ।
एवं कृते तु विप्रेंद्र यमपीडा न जायते ।।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को एकाग्रचित हो एक समय भोजन का व्रत करे। प्रदोषकाल में तेल का दीपक जलाकर उसकी यत्नपूर्वक पूजा करे और घर के द्वार पर बाहर के भाग में उस दीपक को इस उद्देश्य से रखे कि उसके दान से यमराज मुझपर प्रसन्न हों। ऐसा करने से मनुष्य को यमराज की पीड़ा नहीं होती।

यम-दीपदान सरल विधि

यमदीपदान प्रदोषकाल में करना चाहिए । इसके लिए आटे का एक बड़ा दीपक लें। गेहूं के आटे से बने दीप में तमोगुणी ऊर्जा तरंगे एवं आपतत्त्वात्मक तमोगुणी तरंगे (अपमृत्यु के लिए ये तरंगे कारणभूत होती हैं) को शांत करने की क्षमता रहती है । तदुपरान्त स्वच्छ रुई लेकर दो लम्बी बत्तियॉं बना लें । उन्हें दीपक में एक -दूसरे पर आड़ी इस प्रकार रखें कि दीपक के बाहर बत्तियों के चार मुँह दिखाई दें । अब उसे तिल के तेल से भर दें और साथ ही उसमें कुछ काले तिल भी डाल दें । प्रदोषकाल में इस प्रकार तैयार किए गए दीपक का रोली , अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें । उसके पश्चात् घर के मुख्य दरवाजे के बाहर थोड़ी -सी खील अथवा गेहूँ से ढेरी बनाकर उसके ऊपर दीपक को रखना है । दीपक को रखने से पहले प्रज्वलित कर लें और दक्षिण दिशा (दक्षिण दिशा यम तरंगोंके लिए पोषक होती है अर्थात दक्षिण दिशा से यमतरंगें अधिक मात्रामें आकृष्ट एवं प्रक्षेपित होती हैं) की ओर देखते हुए चार मुँह के दीपक को खील आदि की ढेरी के ऊपर रख दें। दीपक रखते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें:

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम।।

इसका अर्थ है, धनत्रयोदशी पर यह दीप मैं सूर्यपुत्र को अर्थात् यमदेवता को अर्पित करता हूं । मृत्युके पाश से वे मुझे मुक्त करें और मेरा कल्याण करें ।
उक्त मन्त्र के उच्चारण के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए यमदेव को दक्षिण दिशा में नमस्कार करें ।

ॐ यमदेवाय नमः । नमस्कारं समर्पयामि ॥

अब पुष्प दीपक के समीप छोड़ दें और पुनः हाथ में एक बताशा लें तथा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे दीपक के समीप ही छोड़ दें ।

ॐ यमदेवाय नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ॥

अब हाथ में थोड़ा -सा जल लेकर आचमन के निमित्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक के समीप छोड़े ।

ॐ यमदेवाय नमः । आचमनार्थे जलं समर्पयामि ।

अब पुनः यमदेव को 'ॐ यमदेवाय नमः' कहते हुए दक्षिण दिशा में नमस्कार करें ।

परम्परागत रूप से कुछ लोग यमदीपदान में 13 दीपक प्रज्वलित करते हैं जिनका शास्त्रीय विधान हम नहीं ढूँढ पाये परन्तु कुलाचार का पालन सभी का प्रथम कर्त्तव्य है अतः वो सभी उसी प्रकार पूजन करें जिस प्रकार उनके पूर्वज करते आये हैं।